(P) ISSN : 2231-0045
(E) ISSN : 2349-9435

VOL.-10, ISSUE-1 August -2021

BI-LINGUAL QUARTERLY
RNI No. : UPBIL/2012/55438

Periodic Research

Multi-disciplinary Peer Reviewed/Refereed International Research Journal

Publisher : Social Research Foundation, Kanpur (SRF International)

Indexed-with Google scholar

Indexed-with ROAD Directory of Open Access Scholarly Resources

Impact Factor

SJIF = 7.147
evaluated by
Scientific Journal Impact Factor

IIJIF = 6.784
evaluated by
International Innovative Journal Impact Factor

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-10, ISSUE-1 August -2021
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

किशोर छात्रों के संवेगात्मक परिपक्वता तथा सामाजिक समायोजन का अध्ययन

Study of Emotional Maturity and Social Adjustment of Adolescents

Paper Submission: 05/08/2021, Date of Acceptance: 13/08/2021, Date of Publication: 22/08/2021

रश्मि गोरे
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
छत्रपति शाहूजी महाराज
विश्वविद्यालय, कानपुर,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

संवेगात्मक परिपक्वता एवं सामाजिक समायोजन सुव्यवस्थित समायोजित व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण शीलगुण होते हैं जो व्यक्ति के जीवन को गुणवत्तापूर्ण बनाते हैं। किशोर विद्यार्थी देश के भविष्य की दिशा को निर्धारित करते हैं। अतः किशोर विद्यार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता एवं सामाजिक समायोजन को ज्ञात करने के लिए प्रस्तुत शोध अध्ययन में 200 हिंदी तथा 200 अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों का चयन किया गया तथा शोध निष्कर्षों में हिंदी तथा अंग्रेजी दोनों ही माध्यम के विद्यार्थी संवेगात्मक रूप से समान परिपक्व पाए गए, किंतु अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन का स्तर हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक था।

Emotional maturity and social adjustment are the important qualities of a well-adjusted personality, which make a person's life Qualitative. Adolescents determine the future of the country.Therefore to know emotional maturity and social adjustment of adolescents a sample of 400 students of 9th class were taken of. Results revealed that the level of social adjustment of English medium students was higher than that of Hindi medium students but both the groups were at par regarding emotional maturity.

मुख्य शब्दः किशोर विद्यार्थी, संवेगात्मक परिपक्वता, सामाजिक समायोजन।
Adolescent Students, Emotional Maturity, Social Adjustment.

प्रस्तावना

शिक्षा मनुष्य का सर्वांगीण विकास करती है तथा गुणवत्ता पूर्ण जीवन जीने के योग्य बनाती है। शिक्षा बालकों की अंतर्निहित शक्तियों का विकास करती है ताकि वे राष्ट्र की प्रगति में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकें। युवा शक्ति के संदर्भ में भारत का विश्व में महत्वपूर्ण स्थान है।भारतीय जनगणना वर्ष 2011 के अनुसार भारत की युवा जनसंख्या उसकी कुल जनसंख्या के 34.8% है।[1] विद्यालय समाज का लघु रूप होता है(डी.वी. जॉन 1907), जहां छात्रों के शारीरिक व मानसिक विकास के साथ-साथ सामाजिक, सांवेगिक एवं चारित्रिक तथा सांस्कृतिक विकास भी होते हैं।वे परस्पर सहयोग, भ्रातृत्व, समन्वय, प्रेम, सहिष्णुता इत्यादि मूल्यों को सीखते हैं, जो किसी भी सभ्य समाज के लिए अति आवश्यक है। बालक बाल्यावस्था के उपरांत किशोरावस्था में प्रवेश करता है। लगभग 11-12 से 18-19 वर्षतक की अवस्था किशोरावस्था कहलाती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) द्वारा किशोरावस्था की उम्र10 से 19 वर्ष स्वीकार की है (पुष्प लता,सी.एवं शशि रूपा (2015)। किशोरावस्था का अंग्रेजी रूपांतरण 'एडोलिसेंस' है जिसका अर्थ है परिपक्वता की और बढ़ना अर्थात 'बाल्यावस्था से परिपक्वावस्था' तक पहुंचने के मध्य का सफर जो कि उथल- पुथल वतनाव भरा भी है, (रानी,ए.,2016)।स्टैनले हॉल (1704) ने किशोरावस्था को संघर्ष, तूफान ओर विरोध की अवस्था कहा है। ई.ए. किलपैट्रिक ने किशोरावस्था को जीवन का सबसे कठिन काल कहा है।वास्तव में किशोर ही वर्तमान की शक्ति एवं भावी आशा को प्रस्तुत करता है (क्रो एंड क्रो)।इस अवस्था में किशोर विद्यार्थियों के लिए, निर्देशन तथा परामर्श की विशेष व्यवस्था करना अति आवश्यक है, क्योंकि किशोरावस्था परिवर्तन की अवस्था है। इस अवस्था में जहां विद्यार्थियों को शैक्षिक एवं व्यवसायिक परामर्श की आवश्यकता होती है (रे,राजीब,2011), वही उचित समायोजन एवं संवेगों के व्यवस्थित संचालन एवं नियंत्रण तथा प्रशिक्षण की भी आवश्यकता होती है।संवेग व्यक्ति में अतिरेक शक्ति का संचार करता है संवेगों का संबंध भावनात्मक पक्ष से होता है। परिपक्वता आंतरिक विकास की प्रक्रिया है। संवेगात्मक परिपक्वता जीवन की चुनौतियों का सामना करके प्रतिकूल परिस्थितियों में सामंजस्य स्थापित करने में सहायक होती है। किशोरों की संवेगात्मक परिपक्वता को स्वास्थ्य, वंशानुक्रम, परिवार, सामाजिक- आर्थिक स्थिति, परिजनों का शैक्षिक स्तर, घर एवं विद्यालय का वातावरण इत्यादि सभी कारक प्रभावित करते हैं। किशोरावस्था ऐसी संधि अवस्था है जिसमें शारीरिक परिवर्तनों के साथ-साथ मानसिक रूप से भी कई परिवर्तन होते हैं। संवेगों का ज्वार या अतिरेक,नेतृत्वकी बलवती भावना,मूल्यांकन एवं सृजनशक्तियों का विकास आदि।